



संधि (Joining)

पढ़िए और समझिए

दिए गए चित्र देखिए। उनके नीचे लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए।



यह हमारा विद्यालय है।

यह हमारा विद्यालय है।



यह सूर्य अस्त है।

यह सूर्यास्त है।



हिमालय को नदी ईश कहा जाता है।

हिमालय को नदीश कहा जाता है।

बच्चों! ऊपर लिखे वाक्यों में 'विद्यालय', 'सूर्य अस्त' तथा 'नदी ईश' शब्दों की संधि होने के बाद नए शब्द बने हैं— देवालय, सूर्यास्त तथा नदीश। ये शब्द पहले शब्द के अंतिम वर्ण और दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण को जोड़कर बने हैं।

जैसे— विद्या + आलय से विद्यालय; वधू + उत्सव से वधूत्सव; नदी + ईश से नदीश शब्द बने हैं।

↓ ↓
अ + आ = आ

↓ ↓
ऊ + उ = ऊ

↓ ↓
ई + ई = ई

संधि का अर्थ मेल है। यहाँ दो वर्णों का मेल हो जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि—

दो वर्णों के मेल से उनके रूप में जो बदलाव या परिवर्तन आता है, वह संधि कहलाता है।

अब आइए, जानें कि संधि-विच्छेद क्या है?

जैसे— विद्यालय = विद्या + आलय

महेंद्र = महा + इंद्र

रवीश = रवी + ईश

संधि के भेद—

संधि के तीन भेद होते हैं— 1. स्वर संधि

2. विसर्ग संधि

3. व्यंजन संधि



1. **स्वर संधि-** स्वर संधि वह होती है, जिसमें स्वर के साथ स्वर का मेल होता है; जैसे—

पुस्तक + आलय = पुस्तकालय

(क+अ) आ
स्वर



गुरु + उपदेश = गुरुपदेश

(र्+उ) उ
स्वर



स्वर संधि के पाँच भेद होते हैं—

(क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् संधि (ङ) अयादि संधि

(क) दीर्घ संधि- जब ह्रस्व या दीर्घ स्वर— अ, आ, इ, ई, उ, ऊ के बाद क्रमशः ये सभी स्वर अ-आ, इ-ई, या उ-ऊ आएँ, तो दोनों के मेल से क्रमशः आ, ई तथा ऊ हो जाते हैं। इसकी चार स्थितियाँ होती हैं—

- (i) अ + अ = आ मत + अनुसार = मतानुसार (त् + अ) = अ + अ = आ
पीत + अंबर = पीतांबर (त + अ) = अ + अ = आ
क्रोध + अग्नि = क्रोधाग्नि (ध् + अ) = अ + अ = आ
- (ii) आ + अ = आ विद्या + अभ्यास = य् + आ = आ + अ = आ विद्याभ्यास
सीमा + अंत = म् + आ = आ + अ = आ सीमांत
यथा + अर्थ = थ् + आ = आ + अ = आ यथार्थ
- अ + आ = आ शरण + आगत = ण् + अ = अ + आ = आ शरणागत
न्याय + आलय = य् + अ = अ + आ = आ न्यायालय
धर्म + आत्मा = म् + अ = अ + आ = आ धर्मात्मा
- आ + आ = आ दया + आनंद = य् + आ = आ + आ = आ दयानंद
वार्ता + आलाप = त् + आ = आ + आ = आ वार्तालाप
महा + आत्मा = ह् + आ = आ + आ = आ महात्मा
- (iii) इ + इ = ई कवि + इंद्र = कवींद्र (व् + इ + इ = ई)
अभि + इष्ट = अभीष्ट (इ + इ = ई)
हरी + इच्छा = हरीच्छा (र् + ई + इ = ई)
- इ + ई = ई रवि + ईश = रवीश (व् + इ + ई = ई)
कपि + ईश = कपीश (प् + इ + ई = ई)
मुनि + ईश = मुनीश (न् + इ + ई = ई)

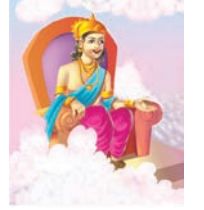


ई + इ = ई	नारी + इंदु = नारींदु (र+ई+इ=ई)
	पत्नी + इच्छा = पत्नीच्छा (न्+ई+इ=ई)
	मही + इंद्र = महींद्र (ह+ई+इ=ई)
ई + ई = ई	रजनी + ईश = रजनीश (न्+ई+ई=ई)
	नदी + ईश = नदीश (द्+ई+ई=ई)
	सती + ईश = सतीश (त्+ई+ई=ई)
(iv) उ + उ = ऊ	सु + उक्ति = सूक्ति (स्+उ+उ=ऊ)
	भानु + उदय = भानूदय (न्+उ+उ=ऊ)
	लघु + उत्तर = लघूत्तर (घ्+उ+उ=ऊ)
उ + ऊ = ऊ	भानु + ऊर्जा = भानूर्जा (न्+उ+ऊ=ऊ)
	सिंधु + ऊर्मि = सिंधूर्मि (ध्+उ+ऊ=ऊ)
	साधु + ऊर्जा = साधूर्जा (ध्+उ+ऊ=ऊ)



(ख) गुण संधि- 'अ' या 'आ' के साथ 'इ' या 'ई' से मेल होने पर ए; 'अ' या 'आ' के साथ 'उ' या 'ऊ' का मेल होने पर ओ; तथा 'अ' तथा 'आ' के साथ 'ऋ' का मेल होने पर अर् हो जाता है। इस प्रकार से मेल होने पर गुण संधि कहलाती है; जैसे-

	स्व	+	इच्छा	=	स्वेच्छा	(अ+इ का मेल)
अ + इ	= ए	वीर	+	इंद्र	=	वीरेंद्र (अ+इ का मेल)
		भारत	+	इंदु	=	भारतेंदु (अ+इ का मेल)
आ + इ	= ए	राजा	+	इंद्र	=	राजेंद्र (आ+इ का मेल)
		यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट (आ+इ का मेल)
		महा	+	इंद्र	=	महेंद्र (आ+इ का मेल)
अ + ई	= ऐ	नर	+	ईश	=	नरेश (अ+ई का मेल)
		सुर	+	ईश	=	सुरेश (अ+ई का मेल)
		परम	+	ईश्वर	=	परमेश्वर (अ+ई का मेल)
आ + ई	= ऐ	महा	+	ईश	=	महेश (आ+ई का मेल)
		रमा	+	ईश	=	रमेश (आ+ई का मेल)
		लंका	+	ईश	=	लंकेश (आ+ई का मेल)



(i) 'अ' या 'आ' के साथ 'उ' या 'ऊ' आने पर 'ओ' हो जाता है; जैसे-

अ + उ = ओ	पर + उपकार = परोपकार (अ+उ का मेल)
	चंद्र + उदय = चंद्रोदय (अ+उ का मेल)
	सर्व + उदय = सर्वोदय (अ+उ का मेल)



आ + उ = ओ	यथा + उचित = यथोचित	(आ+उ का मेल)
	महा + उत्सव = महोत्सव	(आ+उ का मेल)
	महा + उदय = महोदय	(आ+उ का मेल)
अ + ऊ = ओ	सूर्य + ऊष्मा = सूर्योष्मा	(अ+ऊ का मेल)
	समुद्र + ऊर्मि = समुद्रोर्मि	(अ+ऊ का मेल)
	सागर + ऊर्मि = सागरोर्मि	(अ+ऊ का मेल)
आ + ऊ = ओ	गंगा + ऊर्मि = गंगोर्मि	(आ+ऊ का मेल)
	दया + ऊर्मि = दयोर्मि	(आ+ऊ का मेल)
	यमुना + ऊर्मि = यमुनोर्मि	(आ+ऊ का मेल)



(ii) 'अ / आ' के साथ 'ऋ' आने पर 'अर्' हो जाता है; जैसे—

अ + ऋ = अर्	देव + ऋषि = देवर्षि	(अ+ऋ का मेल)
	ग्रीष्म + ऋतु = ग्रीष्मर्तु	(अ+ऋ का मेल)
	सप्त + ऋषि = सप्तर्षि	(अ+ऋ का मेल)
आ + ऋ = अर्	महा + ऋषि = महर्षि	(आ+ऋ का मेल)
	राजा + ऋषि = राजर्षि	(आ+ऋ का मेल)
	वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु	(आ+ऋ का मेल)



(ग) वृद्धि संधि— जब 'अ' या 'आ' के साथ 'ए' या 'ऐ' का मेल हो तो ऐ; तथा 'अ' या 'आ' के साथ 'ओ' या 'औ' का मेल होने पर औ हो जाता है; जैसे—

(i) अ + ए = ऐ	लोक + एषणा = लोकैषणा	(अ+ए का मेल)
	एक + एक = एकैक	(अ+ए का मेल)
आ + ए = ऐ	तथा + एव = तथैव	(आ+ए का मेल)
	सदा + एव = सदैव	(आ+ए का मेल)
अ + ऐ = ऐ	धन + ऐश्वर्य = धनैश्वर्य	(अ+ऐ का मेल)
	मत + ऐक्य = मतैक्य	(अ+ऐ का मेल)
आ + ऐ = ऐ	विद्या + ऐश्वर्य = विद्यैश्वर्य	(आ+ऐ का मेल)
	महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य	(आ+ऐ का मेल)
(ii) अ + ओ = औ	वन + औषधि = वनौषधि	(अ+ओ का मेल)
	दंत + ओष्ठ = दंतौष्ठ	(अ+ओ का मेल)
अ + औ = औ	परम + औषध = परमौषध	(अ+औ का मेल)
	परम + औदार्य = परमौदार्य	(अ+औ का मेल)



आ + ओ = **औ** महा + ओजस्वी = महौजस्वी (आ+ओ का मेल)
 महा + ओज = महौज (आ+ओ का मेल)
 आ + औ = **औ** महा + औषध = महौषध (आ+औ का मेल)
 महा + औध = महौध (आ+औ का मेल)

(घ) **यण् संधि**— यदि 'इ' या 'ई' के बाद कोई अन्य स्वर आए तो इ/ई के स्थान पर 'य्' तथा उ/ऊ के स्थान पर 'व्' हो जाता है। 'ऋ' के बाद कोई स्वर आए, तो 'ऋ' का 'रू' हो जाता है। स्वरों के ऐसे मेल को **यण संधि** कहते हैं; जैसे—

(i) इ-ई + अन्य स्वर = **य्**

नदी	+	अर्पण	=	नद्यर्पण	(ई+अन्य स्वर का य् हो गया)
अति	+	आचार	=	अत्याचार	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
यदि	+	अपि	=	यद्यपि	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
नि	+	ऊन	=	न्यून	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
इति	+	आदि	=	इत्यादि	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)
अभि	+	आगत	=	अभ्यागत	(इ+अन्य स्वर का य् हो गया)

(ii) उ-ऊ + अन्य स्वर के स्थान पर **व्** हो जाता है; जैसे—

सु	+	आगत	=	स्वागत	(उ+अन्य स्वर का मेल)
सु	+	इच्छा	=	स्वेच्छा	(उ+अन्य स्वर का मेल)
अनु	+	इति	=	अन्विति	(उ+अन्य स्वर का मेल)
मधु	+	आलय	=	मध्वालय	(उ+अन्य स्वर का मेल)

(iii) ऋ + अन्य स्वर के स्थान पर **रू** हो जाता है; जैसे—

मातृ	+	इच्छा	=	मात्रिच्छा	(ऋ+अन्य स्वर का मेल)
पितृ	+	अनुमति	=	पित्रनुमति	(ऋ+अन्य स्वर का मेल)
मातृ	+	आनंद	=	मात्रानंद	(ऋ+अन्य स्वर का मेल)

(ङ) **अयादि संधि**— यदि 'ए' या 'ऐ' अथवा 'ओ' या 'औ' के साथ इनसे अलग स्वर आएँ, तो क्रमशः 'ए' का **अय्**, 'ऐ' का **आय्**, 'ओ' का **अव्** तथा 'औ' का **आव्** हो जाता है; जैसे—

ने	+	अन	=	नयन	(ए+अन्य स्वर = अय्)
गै	+	इका	=	गायिका	(ऐ+अन्य स्वर = आय्)
पो	+	अन	=	पवन	(ओ+अन्य स्वर=अव्)
पौ	+	अक	=	पावक	(औ+अन्य स्वर=आव्)



2. **व्यंजन संधि**— व्यंजन वर्णों का व्यंजन वर्ण के साथ अथवा किसी स्वर के साथ मेल होने से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे **व्यंजन संधि** कहते हैं; जैसे—

जगत् + ईश = जगदीश (त् (व्यंजन) + ई (स्वर) का मेल)
वि + छेद = विच्छेद (इ (स्वर) + छ् (व्यंजन) का मेल)

व्यंजन संधि के कुछ अन्य उदाहरण

वाक् + मय = वाङ्मय
षट् + आनन = षडानन
दिक् + गज = दिग्गज
उत् + नति = उन्नति
अनु + छेद = अनुच्छेद
उत् + हरण = उद्धरण
उत् + ज्वल = उज्ज्वल
अन् + अंत = अनंत
उत् + श्वास = उच्छ्वास
तत् + टीका = तट्टीका
तत् + लीन = तल्लीन

उत् + योग = उद्योग
दिक् + अंबर = दिग्ंबर
सम् + कल्प = संकल्प
संधि + छेद = संधिच्छेद
स्व + छंद = स्वच्छंद
भूष + न = भूषण
षट् + दर्शन = षड्दर्शन
उत् + डयन = उड्डयन
षट् + मास = षण्मास
भो + अन = भवन
शे + अन = शयन

3. **विसर्ग संधि**— विसर्ग के बाद किसी व्यंजन के साथ मेल होने पर **विसर्ग संधि** कहलाती है; जैसे—

मनः + हर = मनोहर (विसर्ग + व्यंजन का मेल)
दुः + चरित्र = दुश्चरित्र (विसर्ग + व्यंजन का मेल)
मनः + कामना = मनोकामना, मनस्कामना

दुः + गुण = दुर्गुण
निः + चय = निश्चय
मनः + ज = मनोज
निः + आहार = निराहार
निः + काम = निष्काम
निः + रोग = निरोग
निः + पाप = निष्पाप
नमः + ते = नमस्ते

दुः + शासन = दुश्शासन
मनः + रथ = मनोरथ
यशः + गान = यशोगान
पुनः + जन्म = पुनर्जन्म
निः + संतान = निस्संतान
निः + रस = नीरस
निः + तेज = निस्तेज
दुः + कर = दुष्कर



अध्यापन संकेत

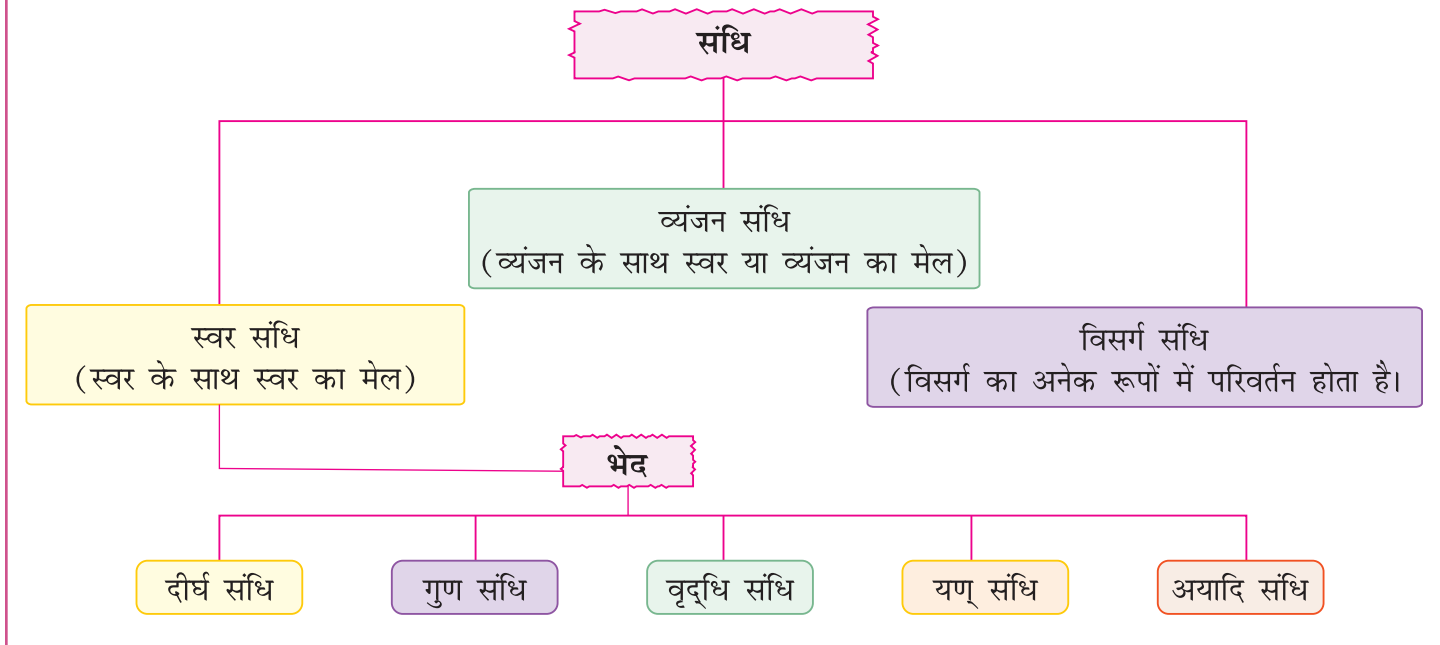
शिक्षक/शिक्षिका कक्षा में बच्चों को संधि व उसका विच्छेदन भेद सहित आसान तरीके से बताएँ ताकि बच्चों को पाठ रुचिकर लगे।





आइए, पुनरावृत्ति करें

- **संधि**- संधि का अर्थ जोड़ या मेल होता है।
- संधि तीन प्रकार की होती है- स्वर संधि, व्यंजन संधि तथा विसर्ग संधि।
- स्वर संधि के भी पाँच भेद होते हैं।
- संधियुक्त शब्दों को अलग करना **संधि-विच्छेद** कहलाता है।
- संधि में वर्णों का मेल होता है, जबकि समास में शब्दों का संक्षिप्तीकरण होता है।



अभ्यास कार्य



मौखिक कार्य

Speaking Skills

दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- स्वर संधि का उदाहरण बताइए।
- 'आ + इ' मिलकर किस वर्ण का निर्माण करता है? बताइए।
- 'स्वेच्छा' में किन वर्णों का मेल हुआ है? बताइए।



लेखन कार्य

Writing Skills

1. दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

- संधि किसे कहते हैं? उदाहरण भी दीजिए।
- संधि के कितने भेद होते हैं?
- व्यंजन संधि किसे कहते हैं? उदाहरण सहित समझाइए।



(घ) स्वर संधि के कितने उपभेद होते हैं?

(ङ) विसर्ग संधि किसे कहते हैं? उदाहरण देकर लिखिए।

2. दिए गए शब्दों का संधि-विच्छेद करके संधि का नाम लिखिए।

गुरुपदेश	=	गुरु	+	उपदेश	—	दीर्घ संधि
(क) लंकेश	=		+		—	
(ख) नद्यर्पण	=		+		—	
(ग) महर्षि	=		+		—	
(घ) स्वागत	=		+		—	
(ङ) जगदीश	=		+		—	
(च) आशीर्वाद	=		+		—	
(छ) पवन	=		+		—	
(ज) उज्ज्वल	=		+		—	
(झ) उद्योग	=		+		—	



3. दिए गए संधि-विच्छेद से संधियुक्त शब्द बनाइए और संधि का नाम लिखिए।

(क) निः	+	चय	=	निश्चय	—	विसर्ग संधि
(ख) शती	+	छंद	=		—	
(ग) निः	+	रस	=		—	
(घ) वाक्	+	मय	=		—	
(ङ) महा	+	आलय	=		—	
(च) कपि	+	ईश	=		—	
(छ) महा	+	ऐश्वर्य	=		—	



4. दिए गए शब्दों को उनके सामने उसकी संधि का नाम लिखिए।

अत्यधिक	—		अन्वय	—		रवीश	—	
परमेश्वर	—		पित्राज्ञा	—		पावक	—	
भवन	—		उन्नति	—		यशोगान	—	



5. दिए गए शब्दों के लिए सही संधि-विच्छेद चुनिए-

(क) सदैव-

- (i) सद + एव ☐ (ii) साद + एव ☐ (iii) सदा + ऐव ☐ (iv) सदा + एव ☐

(ख) लोकोक्ति-

- (i) लोको + कोक्ति ☐ (ii) लोको + उक्ति ☐ (iii) लोक + उक्ति ☐ (iv) लोका + उक्ति ☐

(ग) पर्यावरण-

- (i) पर्य + आवरण ☐ (ii) पर्या + वरण ☐ (iii) परि + आवरण ☐ (iv) परी + आवरण ☐

(घ) अत्यधिक-

- (i) अत्य + धिक ☐ (ii) अत्यध + इक ☐ (iii) अती + अधिक ☐ (iv) अति + अधिक ☐



सोचें-विचारें

Critical Thinking

6. गायक, नायक अयादि संधि के उदाहरण किसी व्यवसाय को दर्शाते हैं। इसी प्रकार आप भी ऐसे संधि शब्द सोचकर लिखिए जो किसी क्षेत्र या वर्ग को दर्शाएँ। उन शब्दों के संधि-विच्छेद भी कीजिए।



खेल-खेल में

Brain Storming Activity

7. दी गई शब्द सारिणी में से संधियुक्त शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

त	थै	व	न	दी	श
म	हो	द	य		रा
ह	वि	द्या	भ्या	स	जे
र्षि	ना	य	क	लो	श
अ	भ्या	ग	त	कै	अ
वा	र्ता	ला	प	ष	न्वि
नी	ला	का	श	णा	ति

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....



प्रेरणादायक मूल्य

जिस प्रकार 'सम्+मान' मिलकर 'सम्मान' शब्द बनता है, उसी प्रकार सम्मान देना मानवीय गुण है।

